SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका

उमाशंकर काँत, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
उमाशंकर काँत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/07/2023
Revised on : -----
Accepted on : 02/08/2023
Plagiarism : 01% on 26/07/2023

शोध सार

"जब मनुष्य का जन्म ही माँ के गर्भ से होता है जिससे समाज का निर्माण होता है तो समाज के संचालन की नीति (राजनीति) उनके बिना कैसे पूरी हो सकती है..?" महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मानव समाज के चहुंमुखी संतुलित विकास एवं संचालन हेतु अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। भारत ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में पुरूष वादी सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन वांछित है, जिससे संपूर्ण मानव सभ्यता अपनी चरम उत्कर्ष को प्राप्त कर सके। शिक्षा के प्रसार के कारण, आज विश्व परिदृश्य परिवर्तित होते हुये नजर आ रहा है। महिलाओं के प्रति उदार भाव, संवेदना, समानता, प्रेम एवं सम्मान में क्रमिक वृद्धि हो रही है जिसके कारण ही विश्व के अनेक राष्ट्रों में महिलाओं की, समाज के प्रत्येक क्षेत्रों में सहभागिता एवं सक्रियता बढ़ रही हैं। महिलाऐं धरती से लेकर अंतरिक्ष, चांद सभी जगहों एवं अवसरों पर पुरूषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर अपने अदम्य साहस, योग्यता एवं क्षमता को सिद्ध करते हुये अपने अस्तित्व को श्रेष्ठता के साथ समाज में स्थापित कर रही हैं।

मुख्य शब्द

भारतीय, राजनीति, महिला, समाज.

प्रस्तावना

मनुष्य, ईश्वर द्वारा प्रकृति को प्रदान की गई अद्वितीय एवं अमूल्य उपहार है। धरती पर राज्य का उद्भव एवं विकास, मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास यात्रा का परिणाम है। सभ्यता एवं संस्कृति राज्य को नियंत्रित एवं निर्देशित कर विकास के रास्ते व पैमाना निर्धारित करती है जिससे एक सशक्त एवं समृद्ध समाज/राष्ट्र का निर्माण होती है।

राज्य की मूल इकाई परिवार है। परिवार के निर्माण में स्त्री और पुरूष दोनो की भूमिका समान होती

है। उसी प्रकार राज्य के कुशल संचालन एवं विकास के लिए स्त्री एवं पुरूष दोनों की समान भागीदारी का संतुलन होना अत्यंत आवश्यक है।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की राजनीतिक प्रक्रियाओं में समाज के सभी वर्गों की चेतना, सक्रियता एवं भागीदारी एक स्वस्थ एवं जीवंत लोकतंत्र को जन्म देती है। राष्ट्र के कुशल संचालन हेतु कानून एवं निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में एक निश्चित मुठ्ठी भर अल्प तंत्र में नहीं वरन् संपूर्ण समाज में निहित होती है जिससे समाज के सभी वर्गों के आवाज मुखर होती है और जनता का आत्मविश्वास एवं मनोबल बढ़ता है।

राजनीतिक भागीदारी समाज के प्रत्येक वर्ग के राजनीतिक जागरूकता व ज्ञान से संबंधित है। यह मताधिकार ही नहीं बल्कि स्वतंत्रता के साथ प्रत्याशी बनने एवं प्रतिनिधित्व करने से है। भारत की आजादी के 75 वर्ष बाद भी राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व/सहभागिता काफी कम एवं निराशाजनक है। इनका मतदान प्रतिशत भी कम है तथा राजनीतिक तंत्र में पुरूषों की अपेक्षा नीचले पायदानों पर यदा कदा दिखाई पड़ती हैं जो लैंगिग भेदभाव को प्रदर्शित करता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन एवं विश्लेषण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

अध्ययन पद्धति

इस शोध प्रपत्र हेतु ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग कर वर्णानात्मक अध्ययन पद्धति के अनुसार विविध अयामों का व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

महिलाओं का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय समाज विभिन्न जाति–धर्मो, बोली–भाषा, खान–पान, रहन–सहन, विभिन्न प्रकार की मान्यताओं जैसे जटिलताओं से भरा है। अतः भारतीय राष्ट्र का संचालन काफी कठिन एवं चुनौतियों से भरा हुआ है। धार्मिक नियमों पर आधारित समाजिक संरचना व भिन्नात्मक प्रस्थिति व भूमिका के कारण अधिकांश समाजों में महिलाओं को उचित स्थान एवं सम्मान नही दिया जाता है, जिसके कारण वे घरों के चार दिवारी के बीच कैद होकर रह जाती हैं। आदिकाल से आज पर्यन्त उनका स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा रोजगार अधिकार न होकर परिवार व समाज की कृपा पर आधारित प्रतीत होती है।

बालिका के जन्म को खुशी के रूप में अधिकांशतया भारतीय समाज अंर्तआत्मा से स्वीकारता नही है। जन्म से मृत्युपर्यन्त महिलाओं को केवल परिवार व समाज की नकारात्मक भावना, हिंसा–शोषण जैसे अभिशाप का सामना करना पड़ता है। महिलाओं के लिये बने विभिन्न प्रकार के कानून इस बात की पुष्टि करता है।

संवैधानिक एवं कानूनी परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

भारत का संविधान राष्ट्र के समस्त नागरिकों को बिना किसी विभेद के चाहे वह महिला हो या पुरूष एवं किसी भी जाति, धर्म, पंथ या वर्ग से हो समान अधिकार प्रदान करता है। समस्त नागरिकों को देश के किसी भी हिस्से में बसने, भ्रमण एवं व्यवहार करने की स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, निर्वाचन में मतदान करने, निर्वाचित होने, संघ बनाने, समान अवसर एवं कानून का समान संरक्षण का अधिकार प्रदान करता है।

जेंडर समानता का सिद्वांत, भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य और नीति निर्देशक सिद्वांतों में प्रतिपादित है। संविधान महिलाओं को न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है, अपितु राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक व्यवहार व सम्मान के उपाय सुनिश्चित करने की शक्ति प्रदान करता है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के ढॉचे के अंतर्गत, हमारे कानून विकास संबंधी नितियों, योजनाओं और कार्यक्रमों के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओ की उन्नति को उदेश्य बनाया गया है पाँचवी पंचवर्षीय योजना (1974–1978) में महिलाओं से जुडे मुद्वो के प्रति कल्याण व विकास का दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। महिलाओं की अधिकारों

एवं कानूनी हकों की रक्षा के लिए वर्ष 1990 में संसद के एक अधिनियम द्वारा संविधान में 73वें और 74 वें संशोधन (1992–93) के माध्यम से महिलाओं के लिए पंचायतों और स्थानीय निकायों के सीटों में आरक्षण का प्रावधान किया गया है, जो स्थानीय स्तरों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001

केन्द्रीय सरकार ने महिलाओं के समूचित विकास को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2001 को ''राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण वर्ष'' घोषित किया है। इस नीति में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नागरिक एवं शारीरिक विकास के अधिकार को सुनिश्चित किया गया है जिससे राष्ट्रीय संचालन की प्रक्रिया में उनकी उचित प्रतिनिधित्व को प्राप्त किया जा सके।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 08 मार्च 1975 से नारी सशक्तिकरण को बल प्रदान करते हुए प्रति वर्ष 08 मार्च को अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया गया है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका

भारतीय इतिहास के अध्ययन से हमें मध्य काल में रजिया सुल्तान, बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मी बाई, दुर्गावती, अहिल्या बाई होलकर, रानी पदमावती, रानी चिन्नमा, रानी अवन्ती बाई जैसे अनेक वीरांगनाओं के राज्य संचालन एवं उनके संघर्षो व बलिदान की जानकारी प्राप्त होती है, वहीं आधुनिक भारत की राजनीति में महिलाओं का पर्दापण हमें भारत के स्वतंत्रता सग्राम में देखने को मिलती है। महात्मा गांधी के आह्वान पर असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोडो आंदोलन व अनेक अवसरों पर देश के हजारों महिलाओं जिनमें सरोजनी नायडू, अरूणा आसफअली, सावित्री बाई फुले, उषा मेहता, सुचेता कृपलानी, सुहसिनी गांगुली, शीला कौल, भीखाजी, इत्यादी ने प्रतिनिधत्व किये थे।

संविधान सभा में महिला प्रतिनिधित्व

01 **सुचेता कृपलानी:** संविधान निर्माण में योगदान देने वाली सुचेता कृपलानी देश की पहली महिला मुख्यमंत्री थी। इनका जन्म 25 जून 1904 को हरियाणा के अंबाला शहर में हुआ था।

02 **मालती चौधरी:** संविधान सभा की सदस्य मालती चौधरी का जन्म पूर्वी बंगाल में हुआ था, वे उड़ीसा के पूर्व मुख्यमंत्री नाबकृष्ण चौधरी की पत्नी थी। मालती चौधरी ने महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए नमक सत्याग्रह में भी भाग लिया था।

03 **विजयलक्ष्मी पंडित:** 18 अगस्त 1900 को इलाहाबाद में जन्मी पंडित जवाहर लाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित भी संविधान निर्माण कमेटी की सदस्य थी। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत इलाहाबाद नगर–निगम चुनाव के साथ की थी।

04 **सरोजिनी नायडू:** देश की पहली महिला के तौर पर राज्यपाल का पद संभालने वाली सरोजनी नायडू का जन्म 23 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष भी रही और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के राज्यपाल की जिम्मेदारी संभाली थी।

05 **राजकुमारी अमत कौर:** इनका जन्म 2 फरवरी 1889 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुआ था, इन्होंने ही देश में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान की स्थापना की थी और करीब 10 साल तक देश की स्वास्थ्य मंत्री रही।

06 **लीला रॉय:** संविधानसभा की सदस्य लीला रॉय का जन्म असम के गोलपाड़ा जिले में 2 अक्टूबर 1900 को हुआ था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की बनाई गई महिला समिति में सदस्य बनाया गया था।

07 **बेगम एजाज रसूल:** संविधान सभा के सदस्यों में बेगम एजाज रसूल एक मात्र मुस्लिम महिला थी। उनका जन्म 2 अप्रैल 1909 को हुआ था।

08 **कमला चौधरी**: लखनऊ के प्रतिष्ठित परिवार में 22 फरवरी 1908 को जन्मी कमला चौधरी भी संविधान सभा की सदस्य थी। वे एक प्रसिद्ध लेखिका थी। कमला चौधरी महात्मा गांधी से जुड़ी हुई थी, वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्य थी।

09 **हंसा मेहता**: हंसा मेहता संविधान निर्माण में अपना योगदान देने के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र से भी जुड़ी हुई थी। उनका जन्म 3 जुलाई 1887 को बड़ौदा में हुआ था, वह 1945–46 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष बनीं।

10 **रेनुका रे**: रेनुका रे पश्चिम बंगाल विधानसभा की सदस्य और मंत्री रहीं। उन्होंने ही बंगाल में अखिल बंगाल महिला संघ और महिला समन्वयक परिषद का गठन किया था। रेनुका रे भी संविधान सभा की सदस्य थी।

11 **दुर्गाबाई देशमुख**: असहयोग आंदोलन में 12 साल की उम्र में जुड़ने वाली दुर्गाबाई देशमुख का जन्म 15 जुलाई 1909 को आंध्रप्रदेश के राजमुंदरी में हुआ था। वे महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह का हिस्सा थी।

12 **अम्मू स्वामीनाथन**: केरल राज्य के पालघाट में 22 अप्रैल 1894 को जन्मी अम्मू स्वामीनाथन भारतीय संविधान सभा की सदस्य थी।

13 **दकश्यानी वेलयुद्धन**: अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों की आवाज उठाने के लिए दकश्यानी वेलयुद्धन को जाना जाता है। संविधान सभा की सदस्यों में अनुसूचित जाति वर्ग से आने वाली वे एक मात्र महिला सदस्य थी।

14 **पूर्णिमा बनर्जी**: सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन से जुड़ी पूर्णिमा बनर्जी भी संविधान सभा की सदस्य थी। समाजवादी विचारधारा से प्रेरित पूर्णिमा बनर्जी उत्तर प्रदेश में आजादी की लड़ाई के लिए बने महिलाओं के समूह की सदस्य थी।

15 **एनी मसकैरिनी**: तिरुवनंतपुरम में जन्मी एनी मसकैरिनी भी संविधान सभा की सदस्य थी। एनी मसकैरिनी त्रावणकोर राज्य में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् वर्तमान तक महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

1. **मतदान**: महिलाओं के मताधिकार के लिए आंदोलन 1900 के दशक में प्रारंभ हुआ। सन् 1921 में मद्रास राज्य महिलाओं का मताधिकार देने वाला पहला राज्य बना। मतदान का अधिकार केवल उन पुरूष और महिलाओं के पास था। जिसके पास ब्रिटिश प्रशासन के रिकार्ड के अनुसार भूमि संपत्ति थी। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भारतीय संविधान के अनुच्छेद 326 के द्वारा नागरिकों को सार्वभौमिक मताधिकार का अधिकार प्रदान किया गया है। लोक सभा निर्वाचन 2019 के अनुसार औसत 57.46 प्रतिशत मतदान हुआ जिसमें पुरूष मतदाता 55. 26 जबकि महिला मतदाता 59.92 प्रतिशत था।

2. **संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय महिला**: सन् 1953–54 में श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र संघ का आठवीं एवं पहली महिला अध्यक्ष थी।

   भारतीय विदेश सेवा की अफसर रूचिरा कंबोज को अगस्त 2022 में अमेरिका के न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय में भारत की स्थायी प्रतिनिधि बनाया गया है। वे भूटान में भारत की पहली राजदूत भी थी। दक्षिण अफ्रिका में उच्चायुक्त एवं युनेस्को में भारत के राजदूत के रूप में कार्य कर चुकी है। साथ ही फ्रांस के भारतीय दूतावास में तीसरे सचिव के रूप में कार्य कर चुकी हैं।

3. **संसद में महिला**

   राष्ट्रपति 1 श्रीमती प्रतिभा पाटिल: भारत की 12वीं राष्ट्रपति (25 जुलाई 2007–2012, केंद्र की यू.पी.ए. सरकार द्वारा समर्थित एवं निर्वाचित)

   2 श्रीमती द्रोपदी मुर्मू: भारत की वर्तमान एवं 15वं राष्ट्रपति (25जुलाई 2022 से अब तक, केंद्र की एन.डी. ए. सरकार द्वारा समर्थित एवं निर्वाचित)

   प्रधानमंत्री 1 इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी: (कार्यकाल 1966 से 1977 एवं 1980 से 1984 मृत्युपर्यन्त)

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने विदेश, रक्षा एवं वित्त जैसे महत्वपूर्ण विभागों को अपने अधीन रखा।

लोकसभा अध्यक्ष प्रथम एवं एकमात्र महिलाः बिहार के सासाराम लोकसभा क्षेत्र से 15वीं लोकसभा में कांग्रेस की सांसद श्रीमती मीरा कुमार को निर्विरोध 04 जून 2009 से 16 मई 2014 तक के कार्यकाल के लिए लोकसभा अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था।

सुषमा स्वराजः दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में 13 अक्टूबर 1998 से 03.12.1998 तक 53 दिन रही। सन् 1998 के बाजपेयी सरकार ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री, दूरसंचार मंत्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री के रूप में कार्य कर चुकी हैं। विदेश मंत्री के रूप में इनका कार्यकाल 26 मई 2014 से 24 मई 2019 तक रहा।

निर्मला सीतारमणः सितम्बर 2017 से मई 2019 के मध्य देश के महत्वपूर्ण विभाग में रक्षा मंत्री के रूप में अपनी बेहतर भूमिका का निर्वहन कर चुकी हैं एवं वर्तमान में 30 मई 2019 से पूर्णकालिक वित्त मंत्री के साथ–साथ वाणिज्य, उद्योग एवं कार्पोरेट विभाग की जिम्मेदारी संभाल रहीं हैं।

सत्रहवीं लोकसभा महिला सदस्य (मार्च 2023 की स्थिति में)

क्र.	सदस्य के नाम	दल	निर्वाचन क्षेत्र और राज्य
01.	बीसेट्टी, डॉ. वेंकट सत्यवती	युवाजन श्रमिक रायथु कांग्रेस पार्टी	अनकापल्ली, आंध्र प्रदेश
02.	अंगड़ी, श्रीमती मंगल सुरेश	भारतीय जनता पार्टी	बेलगाम, कर्नाटक
03.	अनुराधा, श्रीमती चिंता	युवाजन श्रमिक रायथु कांग्रेस पार्टी	अमलापुरम, अ.जा, आंध्र प्रदेश
04.	अम्बरीश, श्रीमती सुमलता	निर्दलीय	मांडया, कर्नाटक
05.	अहमद, श्रीमती साजदा	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	उलूबेरिया, पश्चिम बंगाल
06.	आज़ाद, श्रीमती संगीता	बहुजन समाज पार्टी	लालगंज, अ.जा, उत्तर प्रदेश
07.	इरानी, श्रीमती स्मृति जूबिन	भारतीय जनता पार्टी	अमेठी, उत्तर प्रदेश
08.	ओझा, श्रीमती क्वीन	भारतीय जनता पार्टी	गौहाटी, असम
09.	कुमारी, सुश्री दिया	भारतीय जनता पार्टी	राजसमन्द, राजस्थान
10.	करुणानिधि, श्रीमती कनिमोझी	द्रविड़ मुनेत्र कषगम	थूथुकुडी, तमिलनाडु
11.	कारान्दलाजे, कुमारी शोभा	भारतीय जनता पार्टी	उदुपी चिकमगलूर, कर्नाटक
12.	कोड़ा, श्रीमती गीता	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	सिंहभूम, अ.ज.जा, झारखंड
13.	कोली, श्रीमती रंजीता	भारतीय जनता पार्टी	भरतपुर, अ.जा, राजस्थान
14.	कौर, श्रीमती परनीत	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	पटियाला, पंजाब
15.	खेर, श्रीमती किरण अनुपम	भारतीय जनता पार्टी	चण्डीगढ़, चंडीगढ़
16.	खाडसे, श्रीमती रक्षा निखिल	भारतीय जनता पार्टी	रावेर, महाराष्ट्र
17.	गांधी, श्रीमती मेनका संजय	भारतीय जनता पार्टी	सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश
18.	गांधी, श्रीमती सोनिया	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	रायबरेली, उत्तर प्रदेश
19.	गावीत, डॉ. हिना विजयकुमार	भारतीय जनता पार्टी	नन्दुरबार, अ.ज.जा, महाराष्ट्र
20.	चक्रवर्ती, सुश्री मिमी	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	जादवपुर, पश्चिम बंगाल
21.	चटर्जी, श्रीमती लॉकेट	भारतीय जनता पार्टी	हुगली, पश्चिम बंगाल
22.	चौधरी, सुश्री देबाश्री	भारतीय जनता पार्टी	रायगंज, पश्चिम बंगाल
23.	ज्योति, साध्वी निरंजन	भारतीय जनता पार्टी	फतेहपुर, उत्तर प्रदेश
24.	जरदोश, श्रीमती दर्शना विक्रम	भारतीय जनता पार्टी	सूरत, गुजरात
25.	जहाँ, श्रीमती नुसरत	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	बसीरहाट, पश्चिम बंगाल
26.	जोतिमणि, श्रीमती एस.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	करूर, तमिलनाडु

27.	जोशी, प्रो. रीता बहुगुणा	भारतीय जनता पार्टी	इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
28.	टी. सुमति (ए) तामिझाची थंगापंडियन डॉ.	द्रविड़ मुनेत्र कषगम	चेन्नई दक्षिण, तमिलनाडु
29.	ठाकुर, साध्वी प्रज्ञा सिंह	भारतीय जनता पार्टी	भोपाल, मध्य प्रदेश
30.	दुग्गल, श्रीमती सुनीता	भारतीय जनता पार्टी	सिरसा, अ.जा, हरियाणा
31.	देलकर, श्रीमती कलाबेन मोहनभाई	शिव सेना	दादर और नागर हवेली, दादर और नागर हवेली और दमन और दीव
32.	देवी, श्रीमती अन्नपुर्णा	भारतीय जनता पार्टी	कोडरमा, झारखंड
33.	देवी, श्रीमती रमा	भारतीय जनता पार्टी	शिवहर, बिहार
34.	देवी, श्रीमती वीणा	लोक जन शक्ति पार्टी	वैशाली, बिहार
35.	दस्तीदार, डॉ. श्रीमती काकोली घोष	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	बारासात, पश्चिम बंगाल
36.	पटेल, श्रीमती अनुप्रिया	अपना दल (सोनेलाल)	मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश
37.	पटेल, श्रीमती केसरी देवी	भारतीय जनता पार्टी	फूलपुर, उत्तर प्रदेश
38.	पटेल, श्रीमती शारदाबेन अनिलभाई	भारतीय जनता पार्टी	मेहसाणा, गुजरात
39.	पवार, डॉ. भारती प्रवीण	भारतीय जनता पार्टी	दिन्डोरी, अ.ज.जा, महाराष्ट्र
40.	पाठक, श्रीमती रीती	भारतीय जनता पार्टी	सीधी, मध्य प्रदेश
41.	पोद्दार, श्रीमती अपरूपा	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	आरामबाग, अ.जा, पश्चिम बंगाल
42.	बादल, श्रीमती हरसिमरत कौर	शिरोमणि अकाली दल	भटिंडा, पंजाब
43.	बिसाई, श्रीमती प्रमिला	बीजू जनता दल	आस्का, ओडिशा
44.	भट्ट, श्रीमती रंजनबेन धनंजय	भारतीय जनता पार्टी	वडोदरा, गुजरात
45.	भावना गवली पाटील, सुश्री	शिव सेना	यवतमाल, वाशिम, महाराष्ट्र
46.	भौमिक, कुमारी प्रतिमा	भारतीय जनता पार्टी	त्रिपुरा पश्चिम, त्रिपुरा
47.	मुंडे, डॉ. प्रीतम गोपीनाथ	भारतीय जनता पार्टी	बीड, महाराष्ट्र
48.	मंडल, श्रीमती मंजुलता	बीजू जनता दल	भद्रक, अ.जा, ओडिशा
49.	मण्डल, श्रीमती प्रतिमा	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	जयनगर, अ.जा,पश्चिम बंगाल
50.	मुर्मु, सुश्री चन्द्राणी	बीजू जनता दल	क्योंझर, अ.ज.जा, ओडिशा
51.	मल्लिक, डॉ. राजश्री	बीजू जनता दल	जगतसिंहपुर, अ.जा, ओडिशा
52.	मलोथू, श्रीमती कविता	तेलंगाना राष्ट्र समिति	महबूबाबाद, अ.ज.जा, तेलंगाना
53.	महंत, श्रीमती ज्योत्स्ना चरणदास	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	कोरबा, छत्तीसगढ़
54.	महाजन, श्रीमती पूनम प्रमोद	भारतीय जनता पार्टी	मुम्बई उत्तर–मध्य, महाराष्ट्र
55.	माडम, श्रीमती पूनमबेन हेमतभाई	भारतीय जनता पार्टी	जामनगर, गुजरात
56.	माधवी, श्रीमती गोड्डेति	युवाजन श्रमिक रायथु कांग्रेस पार्टी	अराकु, अ.ज.जा, आंध्र प्रदेश
57.	मीना, श्रीमती जसकौर	भारतीय जनता पार्टी	दौसा, अ.ज.जा, राजस्थान

58.	मोइत्रा, सुश्री महुआ	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	कृष्णनगर, पश्चिम बंगाल
59.	मौर्या, डॉ. संघमित्रा	भारतीय जनता पार्टी	बदायूं, उत्तर प्रदेश
60.	यादव, श्रीमती डिम्पल	समाजवादी पार्टी	मैनपुरी, उत्तर प्रदेश
61.	राठवा, श्रीमती गीताबेन वजेसिंहभाई	भारतीय जनता पार्टी	छोटा उदयपुर, अ.ज.जा, गुजरात
62.	राणा, श्रीमती नवनीत रवि	निर्दलीय	अमरावती, अ.जा, महाराष्ट्र
63.	राय, श्रीमती माला	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	कोलकाता दक्षिण, पश्चिम बंगाल
64.	राय, श्रीमती संध्या	भारतीय जनता पार्टी	भिंड, अ.जा, मध्य प्रदेश
65.	राय (बनर्जी), श्रीमती शताब्दी	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	बीरभूम, पश्चिम बंगाल
66.	लेखी, श्रीमती मीनाक्षी	भारतीय जनता पार्टी	नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली
67.	वर्मा, श्रीमती रेखा अरुण	भारतीय जनता पार्टी	धौरहरा, उत्तर प्रदेश
68.	वांगा, श्रीमती गीता विश्वनाथ	युवाजन श्रमिक रायथु कांग्रेस पार्टी	काकीनाड़ा, आंध्र प्रदेश
69.	शाह, श्रीमती माला राज्यलक्ष्मी	भारतीय जनता पार्टी	टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड
70.	शियाल, डॉ. भारती धीरूभाई	भारतीय जनता पार्टी	भावनगर, गुजरात
71.	संगमा, श्रीमती अगाथा के.	नेशनल पीपल्स पार्टी	तुरा, अ.ज.जा, मेघालय
72.	सेठी, श्रीमती शर्मिष्ठा	बीजू जनता दल	जाजपुर, अ.जा, ओडिशा
73.	सरूता, श्रीमती रेणुका सिंह	भारतीय जनता पार्टी	सरगुजा, अ.ज.जा, छत्तीसगढ़
74.	सुले, श्रीमती सुप्रिया सदानन्द	राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी	बारामती, महाराष्ट्र
75.	साय, श्रीमती गोमती	भारतीय जनता पार्टी	राजगढ़, अ.ज.जा, छत्तीसगढ़
76.	सारंगी, श्रीमती अपराजिता	भारतीय जनता पार्टी	भुवनेश्वर, ओडिशा
77.	सिंह, श्रीमती कविता	जनता दल (यूनाइटिड)	सीवान, बिहार
78.	सिंह, श्रीमती प्रतिभा	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	मंडी, हिमाचल प्रदेश
79.	सिंह, श्रीमती हिमाद्री	भारतीय जनता पार्टी	शहडोल, अ.ज.जा, मध्य प्रदेश
80.	सिंहदेव,श्रीमती संगीता कुमारी	भारतीय जनता पार्टी	बोलनगीर, ओडिशा
81.	हेमामालिनी, श्रीमती	भारतीय जनता पार्टी	मथुरा, उत्तर प्रदेश
82.	हरिदास, श्रीमती राम्या	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	अलथूर, अ.जा, केरल

वर्तमान महिला राज्य सभा सदस्य (मार्च 2023 की स्थिति में)

क्र.	नाम	दल	राज्य
01	बच्चन, श्रीमती जया	सपा	उत्तर प्रदेश
02	बाल्मीक, श्रीमती सुमित्रा	बी जे पी	मध्य प्रदेश
03	बारा, श्रीमती रामिलाबेन बेचारभाई	बी जे पी	गुजरात
04	भारती, श्रीमती मिशा	राजद	बिहार
05	चतुर्वेदी, श्रीमती प्रियंका	एसएस	महाराष्ट्र
06	चव्हाण, श्रीमती वंदना	राकांपा	महाराष्ट्र
07	छेत्री, श्रीमती शांता	एआईटीसी	पश्चिम बंगाल
08	देव, श्रीमती सुलता	बीजद	ओडिशा
09	देव, सुश्री सुष्मिता	एआईटीसी	पश्चिम बंगाल
10	द्विवेदी, श्रीमती सीमा	बी जे पी	उतार प्रदेश

11	गीता उर्फ चंद्रप्रभा श्रीमती	बी जे पी	उत्तर प्रदेश
12	गोस्वामी, सुश्री इंदु बाला	बी जे पी	हिमाचल प्रदेश
13	कर्दम, श्रीमती कांता	बी जे पी	उतार प्रदेश
14	खान, डॉ. फौजिया	राकांपा	महाराष्ट्र
15	कोन्याक, श्रीमती एस फांगनोन	बी जे पी	नगालैंड
16	माजी, श्रीमती महुआ	झामुमो	झारखंड
17	मानसिंह, डॉ. सोनल	बी जे पी	मनोनीत
18	माथेर हिशम, श्रीमती जेबी	कांग्रेस	केरल
19	मोहंता, श्रीमती ममता	बीजद	ओडिशा
20	नेताम, श्रीमती फूलो देवी	कांग्रेस	छत्तीसगढ
21	निर्मला सीतारमण, श्रीमती	बी जे पी	कर्नाटक
22	नूर, श्रीमती मौसम	एआईटीसी	पश्चिम बंगाल
23	पाण्डेय, सुश्री सरोज	बी जे पी	छत्तीसगढ
24	पाटीदार, सुश्री कविता	बी जे पी	मध्य प्रदेश
25	पाटिल, श्रीमती रजनी अशोकराव	कांग्रेस	महाराष्ट्र
26	रंजन, श्रीमती रंजीत	कांग्रेस	छत्तीसगढ
27	सैनी, डॉ. कल्पना	बी जे पी	उत्तराखंड
28	सेन, सुश्री डोला	एआईटीसी	पश्चिम बंगाल
29	सिंह, श्रीमती दर्शना	बी जे पी	उतार प्रदेश
30	सोमू, डॉ. कनिमोझी एनवीएन	द्रमुक	तमिलनाडु
31	उषा, श्रीमती पीटी	एनओएम	मनोनीत
32	यादव, श्रीमती संगीता	बी जे पी	उत्तर प्रदेश
33	याज्ञनिक, डॉ. अमी	कांग्रेस	गुजरात

(वर्तमान केन्द्रीय मंत्री परिषद् में 11 महिला सांसदों को शामिल किया गया है।)

स्वाधीनता के बाद पहली संसद में 20 कैबिनेट मंत्रालय में एकमात्र स्वास्थ्य मंत्रालय का प्रभार एक महिला को मिला वह थी राजकुमारी अमृत कौर। पहली लोकसभा में 24 महिला सांसद थी, दूसरी लोकसभा में भी यही संख्या रही। लोकसभा वेबसाइट पर उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, तीसरी लोकसभा (1962–67) में इस प्रकार यह संख्या बढ़कर 37 पहुँची। इसके बाद चौथी, पाँचवी और छठी लोकसभा में यह संख्या गिरकर 33, 28 और 21 रह गयी। सातवीं लोकसभा (1980–84) में यह संख्या बढ़कर 32 पहुँची, वहीं आठवीं लोकसभा (1984–89) में 45 महिलाएँ निर्वाचित होकर संसद पहुँची, फिर नौवीं लोकसभा (1989) में यह संख्या गिरकर 28 हो गयी। 10वीं लोकसभा (1991–96) में 42 महिलाएं निर्वाचित हुयी और 11वीं लोकसभा में यह संख्या बढ़कर 41 रही। 12वीं लोकसभा में 44 महिला सांसद थी, तो 13वीं, 14वीं में 52 महिलाएँ संसद पहुँची। 15वीं लोकसभा (2009–19) में इस संख्या में कुछ ज्यादा वृद्धि हुई और 66 महिलाएँ संसद पहुँची। 16वीं लोकसभा में महिलाओं की संख्या–68 और 17वीं लोकसभा में अब तक की सबसे अधिक 78 महिलाएँ संसद पहुँची। वर्तमान में 82 महिला लोकसभा सांसद है। महिला सांसदों की कुल सदस्य संख्या 15.12 प्रतिशत है।

4. राज्य विधान मण्डल/विधानसभा में महिला प्रतिनिधित्व

राज्यपाल (अब तक)

क्र.	नाम	कार्यकाल	राज्य
01	सरोजनी नायडू	15 अगस्त1947 से 02 मार्च 1949	सयुक्त प्रांत

02	पद्यजा नायडू	03 नवम्बर 1956 से 31 मई 1967	पश्चिम बंगाल
03	विजयलक्ष्मी पंडित	28 नव. 1962 से 18 अक्टू. 1964	महाराष्ट्र
04	शारदा मुखर्जी	05 मई 1977 से 05 अग. 1983	आन्ध्र प्रदेश, गुजरात
05	ज्योति वेंकटचलम	14 अक्टू. 1977 से 27 अक्टू 1982	केरल
06	कुमुदबेन जोशी	26 नवम्बर 1985 से फरवरी 1990	आन्ध्र प्रदेश
07	रामदुलारी सिन्हा	23 फरवरी 1988 से 12 फरवरी 1990	केरल
08	सरला ग्रेवाल	31 मार्च 1989 से 05 फरवरी 1990	मध्य प्रदेश
09	शीला कौल	17 नवम्बर 1995 से 23 अप्रै. 1996	हिमाचल प्रदेश
10	फातिमा बीवी	25 जन. 1997 से 01 जुलाई 2001	तमिलनाडु
11	वीएस रमादेवी	26 जुलाई 1997 20 अगस्त 2002	हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक
12	प्रतिभा देवी सिंह पाटिल	08 नव. 2004 से 23 जून 2007	राजस्थान
13	प्रभा राव	19 जुलाई 2008 से 26 अप्रैल 2010	हिमाचल प्रदेश व राजस्थान
14	मार्गरेट अल्वा	06 अगस्त 2009 से 07 अगस्त 2014	उत्तराखंड, राजस्थान
15	कमला बेनीवाल	27 नव. 2009 से 06 अगस्त 2014	गुजरात व मेजोरम
16	उर्मिला सिंह	25 जनवरी 2010 से 27 जन. 2015	हिमाचल प्रदेश
17	शिला दीक्षित	11 मार्च 2014 से 25 अग. 2014	केरल
18	मृदुला सिन्हा	31 अग. 2014 से 02 नव. 2019	गोवा
19	द्रोपदी मुर्मु	18 मई 2015 से 13 जुलाई 2021	झारखण्ड
20	नजमा हेपतुल्ला	21 अग. 2016 से 10 अग. 2021	मणिपुर
21	आनंदीबेल पटेल	15 अग. 2018 से वर्तमान	छ0ग0, उ0प्र0
22	बेबी रानी मौर्य	26 अग. 2018 से 15 सित. 2021	उत्तराखण्ड
23	अनुसुईया उइके	29 जुलाई 2019 से	छ0ग0
24	तमिलिसाई सुंदरराजन	08 सित. 2019 से वर्तमान	तेलंगाना

महिला मुख्यमंत्री (अब तक)

क्र.	नाम	दल/पार्टी	राज्य	कार्यकाल
01.	सुचेता कृपालानी	क्रांग्रेस	उत्तर प्रदेश	2 अक्टू. 1963 से 13 मार्च 1967
02.	नंदिनी सत्पथी	क्रांग्रेस	उत्तर प्रदेश	2 अक्टू. 1963 से 13 मार्च 1967
03.	शशिकला काकोडकर	महाराष्ट्रवादी गोमांतक	गोवा	12 अग. 1973 से 27 अप्रैल 1979
04.	अनबारा तैमूर	क्रांग्रेस	असम	6 दिसं. 1980 से 30 जून 1981
05.	बी.एन. जानकी रामचंद्रन	ए.आई.ए.डी.एम.के.	तमिलनाडु	7 जन. 1988 से 30 जन. 1988
06.	जे. जयललिता	ए.आई.ए.डी.एम.के.	तमिलनाडु	2 मार्च 2002 से 5 दिस. 2016 के मध्य (कार्यकाल–3 बार)
07.	मायावती	ब.स.पा.	उ.प्र.	13 जून 1995 से 15 मार्च 2012 के मध्य (कार्यकाल–4)
08.	राजिंदर कौर भट्टल	क्रांग्रेस	पंजाब	21 नवं. 1996 से 12 फर. 1997
09.	राबडी देवी	राष्ट्रीय जनता दल	बिहार	25 जुलाई 1997 से 6 मार्च 2005
10.	सुषमा स्वराज	भा.ज.पा.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	12 अक्टू. 1998 से 3 दिसं. 1998

11.	शीला दीक्षित	कांग्रेस	दिल्ली	3 दिसंबर 1998 से 28 दिसंबर 2013
12.	उमा भारती	भा.ज.पा.	म.प्र.,	8 दिसंबर 2003 से 23 अगस्त 2004
13.	वसुंधरा राजे	भा.ज.पा.	राजस्थान	8 दिसं. 2003 से 17 दिसं. 2018
14.	ममता बनर्जी	तृणमूल कांग्रेस	पं. बंगाल	20 मई 2011 से वर्तमान
15.	आनंदी पटेल	भा.ज.पा.	गुजरात	22 मई 2014 से 7 अग. 2016
16.	महबूबा मुफ्ती	पीपुल्स डेमोक्रेटिक	जम्मू एण्ड कश्मीर	4 अप्रै. 2016 से 19 जून 2018

25 वर्षों में चुने गए विधायकों में 92 प्रतिशत पुरूष

लोकसभा चुनावों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में लगातार वद्धि

पूर्वोत्तर राज्य नागालैंड को मार्च 2023 में पहली बार अपनी दो महिला विधायक नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी की हकानी जाखलू और सलहौतुओनुओ क्रूस– मिलीं, तो इसके कारण उठी खुशी की लहर ने एक दूसरे पूर्वोत्तर राज्य त्रिपुरा, द्वारा एक और मींल का पत्थर पार करने की उपलब्धि पर पर्दा सा डाल दिया। अध्ययन से पता चलता है कि सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में पिछले 25 वर्षों के दौरान चुने गए कुल 21,161 विधायकों (दोबारा चुने गए विधायकों को हर बार अलग से गिना गया है), में से केवल 1,584 महिलाएं थीं। इसका मतलब यह है कि इस दौरान चुने गए सभी विधायकों में से 92 प्रतिशत से अधिक पुरूष थे। इस विश्लेषण का उद्देश्य ये पता करना था कि विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं द्वारा किस तरह से प्रतिनिधित्व किया गया है, और यह कि इसमें कैसे बदलाव आया है। 2 मार्च को घोषित त्रिपुरा विधानसभा चुनावों के परिणामों से पता चलता है कि, इस राज्य के विजेताओं में से 15 प्रतिशत महिलाएं थीं और यह पिछले 25 वर्षों के दौरान किसी भी राज्य विधानसभा या लोकसभा चुनाव में उनकी जीत का सबसे अधिक अनुपात है।

मार्च 2023 में त्रिपुरा द्वारा पार किए गये मील के पत्थर तक, यह हरियाणा (2014 का विधानसभा चुनाव) और छत्तीसगढ़ (2018 का विधानसभा चुनाव) ही थे, जिन्होने पिछले 25 वर्षों में महिला विधायकों के उच्चतम अनुपात को चुना था। दोनों राज्यों के लिए यह आंकड़ा 14.14 फीसदी था। हरियाणा में जहां 2011 की जनगणना के अनुसार सभी भारतीय राज्यों में सबसे खराब लिंगानुपात (प्रति 1,000 पु./879 म.) के लिए विशेष रूप से यह महत्वपूर्ण बात है। साल 2000 में मध्यप्रदेश से अलग होने के बाद छत्तीसगढ़ में 2003 में 6 प्रतिशत महिला विधायकों वाली विधानसभा का गठन हुआ था, जबकि यह म.प्र. में 8 प्रतिशत था। 2018 के वि.स. चुनाव में छत्तीसगढ़ में 14.44 प्रतिशत महिला विधायक चुनी गई थी लेकिन म.प्र. में यह 9.13 प्रतिशत था। पूर्वोत्तर राज्यों की स्थिति अब तक अत्यंत चिंतनीय है। विधानसभाओं में निर्वाचित महिलाओं का औसत राष्ट्रीय अनुपात 7 से 9 प्रतिशत के बीच स्थिर है।

5. पंचायतों/स्थानीय स्वशासन में महिला प्रतिनिधि

शासन के विकेन्द्रीकरण के दिशा में सन् 1992 में 73वें और 74वें संविधान संशोधन किया गया जिसमें पंचायतों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया था। वर्तमान में देश के लगभग 20 राज्यों के पंचायतों में यह आरक्षण 50 प्रतिशत हो चुका है। सन् 2008 में छ0ग0 में भी यह परिवर्तित हो चुका है।

वर्तमान में भारत में जिला पंचायतों की संख्या 660, जनपद पंचायत 6834, ग्राम पंचायत 255780 है जिसमें 9,00,000 लाख महिला प्रतिनिधि हैं, जिनमें 59,000 से अधिक महिला अध्यक्ष के रूप में काम कर रही हैं। स्थानीय निकायों के लगभग 67 प्रतिशत सीट पर महिला प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

विकेन्द्रित लोकतंत्र के नजरिये से पंचायती राज में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सकारात्मक है जिसके कारण महिलाओं के आत्मविश्वास, कार्यकुशलता, उत्साह एवं सक्रियता में निरंतर प्रगति हो रही है। आर्या राजेन्द्रन 21 साल में मेयर बनने का एवं रेशमा मरियम सबसे युवा पंचायत अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त किये।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में चुनौतियां

1. **यौन हिंसाः** महिलाओं की राजनीति में भाग लेने की क्षमता में हिंसा की खतरा एक महत्वपूर्ण बाधा है। महिलाओं का यौन शोषण, बाल विवाह, घरेलू हिंसा और कम साक्षरता दर ने भारतीय महिलाओं के आर्थिक एवं राजनीतिक अवसरों को कम किया है। 2011 के एक अध्ययन में पाया गया है कि 24 प्रतिशत भारतीय पुरूषों ने अपने जीवन में कभी न कभी यौन हिंसा की है। 20 प्रतिशत ने अपने साथियों को यौन संबंध स्थापित करने के लिए विवश किया है तथा 38 प्रतिशत पुरूषों ने स्वीकारा है कि, उन्होने अपने साथियों के साथ शारीरिक दुर्व्यवहार किया है।
2. **पुरूष वर्चस्ववादी राजनीतिः** लोकनीति सी.एस.डी.एस. (सेन्टर फार स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज) और कोनरॉड एडेनॉयर स्टिकटेग ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी की जिसमें महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बड़ा बाधक तत्व इस क्षेत्र में पुरूषों का वर्चस्व है। महिलाएं कहती हैं कि घरों में परिवारिक निर्णयन लेने का अधिकार नहीं है तो राजनीतिक भागीदारी एवं निर्णयन में कैसे स्वतंत्रता मिलेगी। इसका प्रमुख कारण रूढ़ीवादी सामाजिक ढांचा एवं पितृसत्तावादी सोच है। पुरूषों का मानना है कि, राजनीतिक क्षेत्र में हिंसा, दंगा, शोषण, आक्रमकता, उग्रता का माहौल उत्पन्न हो जाता है जिस पर विजय पाना महिलाओं के लिए असंभव होता है।
3. **राजनीतिक दलों का महिलाओं के प्रति उदासीनताः** भारतीय समाज वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित है। जिसके कारण समाज पुरूषवादी एवं पितृ सत्तात्मक प्रकृति की है। राजनीतिक दलों में पुरूषों का वर्चस्व इसी सोच के कारण मजबूती से स्थापित है जिसके कारण महिलाओं के प्रति मानसिकता एवं व्यवहार भेदभावपूर्ण व उदासीन है। अतः महिलाओं को राजनीतिक संगठनों, प्रक्रियाओं एवं शासन तंत्र से दूर रखने का प्रयास किया जाता रहा है साथ ही पुरूष अपनी पदस्थिति एवं सामाजिक वर्चस्व के प्रति चिंतित हो जाते हैं।
4. **महिलाओं में अशिक्षा/निरक्षरताः** भारतीय समाज में शिक्षा की स्थिति गंभीर एवं चिंताजनक है। यह विशेषकर महिला वर्ग से अत्यधिक संबंधित है। जनवरी 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार भारत देश के वयस्कों में 25.6 प्रतिशत निरक्षरता है। देश में महिला साक्षरता 65.46 प्रतिशत है, जो पुरूषों के साक्षरता 82. 14 प्रतिशत से काफी कम है। निरक्षरता महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया को समझने, भाग लेने में बड़ी बाधक तत्व है। अशिक्षित महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक शोषण एवं निंदा का शिकार होना पड़ता है जिसका जीवंत प्रमाण हमें विभिन्न समाचार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समय–समय पर इस आधुनिक दौर में भी आसानी से मिल जाते हैं।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वद्धि के उपाय

महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ने से राजनीतिक परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव एवं विकास होने की उम्मीद है। राजनीति की विविध पहलुओं जैसे राष्ट्रीय संचालन, सुरक्षा, विदेश नीति, शिक्षा, कृषि उद्योग एवं परिवार कल्याण इत्यादि क्षेत्रों में देश की आधी आबादी (महिला) की सोच एवं आवाज को दबाया एवं नजरअंदाज नहीं किया जा सकता इसलिये जरूरी है कि, महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने के निम्न उपाय किये जाने चाहियेः

I संसद में लंबित महिला आरक्षण विधेयक पारित करना।

II राजनीतिक दलों के द्वारा उचित एवं पर्याप्त महिला सहभागिता को शामिल करना।

III सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक रूढ़िया और पुरूषवादी वर्चस्व के नजरिये में बदलाव।

IV कुशल एवं योग्य मानव संसाधन नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी एवं स्थिति को सुनिश्चित करने हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया जाना।

V वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत 18वें क्रम पर है जिसे और बेहतर

करने हेतु महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने की आवश्यकता है जिसके लिए समाज एवं राजनीतिक संगठनों को मिलकर सार्थक प्रयास करना होगा।

निष्कर्ष

भारतीय समाज की जटिल संरचना में पुरूषों और महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं और कर्तव्यों के कारण राजनीति को केवल पुरूषों के लिए उपयुक्त माना जाता है, जो उचित नहीं है। संपूर्ण जनसंख्या में लगभग आधी संख्या महिलाओं की होती है अतः राजनीति के लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी संतुलित प्रतिनिधित्व का होना अत्यंत आवश्यक है जिससे मजबूत लोकतंत्र का निर्माण हो सकेगा। उपर्युक्त वर्णन से यह प्रतीत होता है कि, हमारे देश की राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी में बढ़ोत्तरी हो रही है और भविष्य में संतुलित लक्ष्य को प्राप्त करना संभव हो सकेगा जिसके लिए समाज, सरकार एवं राजनीतिक संगठनों को मिलकर सकारात्मक रूप से कार्य करना होगा।

संदर्भ सूची

1. आर्या, अशोक (2015), ''भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका'' जयपुर, *जर्नल ऑफ एडवांसेज एण्ड स्कॉलइजी रिसर्च इन एलीड एजुकेशन*।
2. उषा, बाला एण्ड शर्मा, अंशु (1986) *इण्डियन वोमेन फ्रीडम फाइट्र्स–1857 टू 1947,* नई दिल्ली।
3. शर्मा, प्रज्ञा (2011), *''महिला विकास और सशक्तिकरण''* जयपुर, आविष्कारक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
4. सोलंकी, ललिता (2015), *''महिला आर्थिक सशक्तिकरण एवं पंचायती राज,''* क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
5. गुप्त, विश्वनाथ (2015), *'भारत में पंचायती राज'* सुरभि प्रकाशन, दिल्ली।
6. कुमारी ममता, (2018), 'पंचायती राज, महिला सशक्तिकरण यथार्थ के आइने में', भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका अंश द्वितीय।
7. सारस्वत, स्वपनिल एवं सिंह, निशांत (2004), *'समाज, राजनीति और महिलाएं',* राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
8. नन्दा, वी. आर. (1990), *इण्डियन वोमेन फ्राम पर्दा टू माडर्निटी,* लन्दन।
9. अस्थाना, प्रतिमा (1974), *वोमेन्स मूवमेन्ट इन इण्डिया,* दिल्ली,
10. Loksabhahindi.nic.in
11. Rajyasabha.nic.in
12. Navbharat News Paper

****